https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

NEW DELHI | KVS HQ

संस्करण: अगस्त 2026
वर्ष-2, अंक- 2
4 पृष्ठ

केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

** यह 'केन्द्रीय विद्यालय क्रॉनिकल' के अंग्रेज़ी संस्करण का हिंदी अनुवाद है।*

संपादकीय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के छ: वर्ष
विकसित भारत की ओर बढ़ते सशक्त कदम

29 जुलाई 2026 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की छठी वर्षगांठ मनायी गई। यह एक परिवर्तनकारी नीति है, जिसने देश की शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा दी है। 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यार्थियों को तैयार करने के साथ-साथ उन्हें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़े रखने की परिकल्पना के साथ बनाई गई यह नीति अब देशभर के विद्यालयों में प्रभावी रूप से साकार होती दिखाई दे रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक निपुण भारत मिशन के माध्यम से आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता (एफएलएन) पर दिया गया विशेष बल है। यह मानते हुए कि प्रत्येक बच्चे के भविष्य के शिक्षण की नींव मजबूत आधारभूत कौशलों पर निर्भर करती है, विद्यालयों ने नवाचारी शिक्षण-पद्धतियाँ, दक्षता-आधारित मूल्यांकन तथा रोचक शिक्षण-सामग्री को अपनाया है, ताकि प्रारम्भिक वर्षों में ही बच्चों में पढ़ने, लिखने और गणनात्मक दक्षता विकसित हो सके।

5+3+3+4 पाठ्यचर्या संरचना के कार्यान्वयन ने पारंपरिक 10+2 प्रणाली का स्थान लेते हुए विद्यालयी शिक्षा को बच्चों के विकासात्मक चरणों के अनुरूप बनाया है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा अनुभवात्मक शिक्षण, दक्षता-आधारित शिक्षा तथा रटने की प्रवृत्ति में कमी पर विशेष बल दिए जाने से कक्षाएँ अधिक रोचक, सहभागितापूर्ण और विद्यार्थी-केंद्रित बनी हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के समावेशन को भी नई गति प्रदान की है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, स्मार्ट कक्षाएं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित शिक्षण, वर्चुअल प्रयोगशालाएं, कोडिंग तथा डिजिटल संसाधनों ने सीखने के अवसरों को पाठ्यपुस्तकों से आगे तक विस्तारित किया है। साथ ही बहुभाषी शिक्षा, भारतीय भाषाओं, कला-एकीकरण, खेल-एकीकरण, व्यावसायिक शिक्षा, पर्यावरण जागरूकता तथा मूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देकर इससे विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित किया गया है। मूल्यांकन सुधारों ने रटने पर आधारित प्रणाली के स्थान पर समझ, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता तथा ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग को महत्व दिया है। शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास, विद्यालय नेतृत्व को सुदृढ़ बनाने तथा समावेशी शिक्षा की दिशा में किए गए प्रयासों ने शिक्षा की गुणवत्ता को और समृद्ध बनाया है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने उसकी शैक्षणिक उत्कृष्टता की परंपरा को और अधिक सुदृढ़ करने का प्रभावी आधार प्रदान किया है। देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों में विद्या प्रवेश, निपुण भारत मिशन का क्रियान्वयन, दक्षता-आधारित शिक्षण, अनुभवात्मक एवं कला-एकीकृत अधिगम, पीएम श्री विद्यालय, अटल टिंकरिंग लैब के माध्यम से एसटीईएम शिक्षा, AI, कोडिंग, बहुभाषी शिक्षण, समावेशी कक्षाएं, खेल, स्वास्थ्य, जीवन-कौशल तथा पर्यावरण संरक्षण जैसी पहलें नीति को कक्षा तक सफलतापूर्वक पहुँचाने का उदाहरण बनी हैं। के.वि.सं. ने निरंतर यह सिद्ध किया है कि नवाचार, समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक विशाल सार्वजनिक विद्यालय प्रणाली में साथ-साथ विकसित हो सकते हैं।

अपने शुभारम्भ के छह वर्ष बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अब केवल एक योजना नहीं, बल्कि शिक्षा में बदलाव का देशव्यापी अभियान बन चुकी है। इसके सही तरीके से लागू होने, शिक्षकों को और मजबूत बनाने तथा सभी बच्चों को समान अवसर देने की दिशा में अभी भी लगातार काम करना जरूरी है। फिर भी इसकी दिशा साफ है। यह नीति जिज्ञासु, सक्षम, नैतिक और आत्मविश्वासी विद्यार्थियों को तैयार कर विकसित भारत@2047 के लिए मजबूत शैक्षिक आधार बना रही है और भारत की युवा शक्ति को उसकी सबसे बड़ी ताकत में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

~ **विकास गुप्ता,** आईएएस
■ ***आयुक्त के.वि.सं.***

सार्थक पहल: हर विषय में पठन और लेखन कौशल का प्रभावी समावेशन

पी.बी.एस. उषा
■ *संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप कक्षाओं में शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं सुदृढ़ बनाने के लिए केन्द्रीय विद्यालय संगठन निरंतर प्रयासरत है। इसी दिशा में के.वि.सं. ने सभी विषयों में पठन एवं लेखन रणनीतियों के एकीकरण पर एक व्यापक हैंडबुक विकसित की है। यह हैंडबुक शिक्षकों को प्रत्येक विषय के शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में पठन और लेखन कौशल का प्रभावी समावेश करने में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

इसका मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि साक्षरता केवल भाषा विषय तक सीमित न रहकर प्रत्येक विषय के अधिगम की आधारशिला बने, जिससे विद्यार्थियों में विषय की गहन समझ, आलोचनात्मक चिंतन और प्रभावी अभिव्यक्ति का विकास हो सके। यह हैंडबुक विद्यार्थियों को केवल उत्तर लिखने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से समझाने, तर्कों को प्रमाण सहित प्रस्तुत करने, अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने, अधिगम पर चिंतन करने तथा विचारों को सुव्यवस्थित और प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती है। जब इन पठन-लेखन गतिविधियों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाया जाता है, तो विद्यार्थियों की विषय-वस्तु पर समझ अधिक गहरी होती है।

यह हैंडबुक एकीकरण को अलग गतिविधि नहीं मानती, बल्कि इसे पढ़ाने के तरीके का हिस्सा मानती है। इसमें बताया गया है कि शिक्षक अपनी रोज की कक्षाओं में पढ़ने और लिखने की रणनीतियों को आसानी से कैसे शामिल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान के शिक्षक विद्यार्थियों से प्रयोग के परिणामों का विश्लेषण करवाकर साक्ष्य के आधार पर व्याख्या लिखवा सकते हैं। गणित के विद्यार्थियों को सरलता से सवाल हल करने के तरीके को समझाया जा सकता हैं। सामाजिक विज्ञान में विद्यार्थी अलग-अलग स्रोतों की तुलना करके तर्क बना सकते हैं, और भूगोल में मानचित्र पढ़कर पैटर्न समझ सकते हैं। इससे पढ़ाई अधिक रोचक और समझने योग्य बनती है।

शिक्षकों की मदद के लिए इस हैंडबुक में सरल और उपयोगी कक्षा रणनीतियाँ दी गई हैं, जैसे—पहले सीखी बातों को याद करना, प्रश्न पूछना, पाठ पर नोट्स बनाना, चित्र और चार्ट का उपयोग करना, सार लिखना, सोचकर लिखना, समूह में चर्चा करना और सीखने के लिए लिखना। ये सभी तरीके हर विषय और हर कक्षा के लिए उपयोगी हैं और इन्हें बिना अतिरिक्त समय लिए सामान्य कक्षा में आसानी से उपयोग किया जा सकता है।

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के सहयोग से तैयार यह हैंडबुक के.वि.सं. की उस सोच को दिखाती है, जिसमें विषय आधारित साक्षरता और क्षमता आधारित शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है। यह शिक्षकों को सरल और व्यावहारिक तरीके देती है, जिनसे वे विद्यार्थियों को समझकर पढ़ने, सोचकर लिखने और हर विषय में अपने विचार अच्छे से व्यक्त करने में मदद कर सकें।

इस पहल के माध्यम से के.वि.सं. ने यह फिर से स्पष्ट किया है कि उसका लक्ष्य ऐसी कक्षाएं बनाना है, जहाँ हर शिक्षक साक्षरता को बढ़ावा दे और हर विषय विद्यार्थियों को सोचने, समझने और जीवन भर सीखते रहने के लिए प्रेरित करे। यह हैंडबुक एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे ऐसी शिक्षा संस्कृति विकसित हो सके जहाँ विद्यार्थी समझने के लिए पढ़ें, सोचने के लिए लिखें और हर विषय से सीखें।

'समागम': डिजिटल परिवर्तन की दिशा में के.वि.सं. का अभिनव कदम

सुगम प्रक्रियाएँ, सशक्त शिक्षा

मनोज कुमार पाण्डेय
■ *सहायक आयुक्त (आईटी)*

सम्मेलन को संबोधित करते श्री विकास गुप्ता।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने अपनी प्रमुख डिजिटल परिवर्तन पहल 'समागम (SAMAGAM)' को 1–2 जुलाई 2026 को जयपुर स्थित राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित 29वें राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस सम्मेलन (NCeG) में देशभर के नीति-निर्माताओं, प्रशासकों एवं डिजिटल गवर्नेंस विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया। प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग (DARPG), इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा राजस्थान सरकार द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस सम्मेलन का विषय था——"विकसित भारत@2047: कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) समर्थित, डेटा-संचालित एवं सुरक्षित डिजिटल गवर्नेंस।" इस प्रतिष्ठित मंच पर केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने 'समागम' के माध्यम से शिक्षा प्रशासन में डिजिटल नवाचार, पारदर्शिता, दक्षता और डेटा-आधारित निर्णय-प्रक्रिया को सशक्त बनाने की अपनी पहल को प्रभावी रूप से प्रदर्शित किया।

सम्मेलन के दूसरे दिन आयोजित छठे सत्र का विषय था— "स्कूली शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए डिजिटल हस्तक्षेप"। सत्र में इस बात पर व्यापक विचार-विमर्श किया गया कि डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ किस प्रकार स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता, समावेशिता और प्रशासनिक दक्षता को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सत्र की अध्यक्षता केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त श्री विकास गुप्ता ने की। इस अवसर पर शिक्षा प्रशासन में प्रौद्योगिकी के प्रभावी, पारदर्शी और नवाचार-आधारित उपयोग पर विशेष बल दिया गया। यह सहभागिता शिक्षा की गुणवत्ता, सुगमता और प्रशासनिक दक्षता को नई ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए डिजिटल नवाचारों के प्रभावी उपयोग के प्रति केन्द्रीय विद्यालय संगठन की दृढ़ प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण रही।

इस सत्र में डिजिटल हस्तक्षेपों के माध्यम विशेष रूप से 'समागम (SAMAGAM)' पर प्रकाश डाला गया, जो के.वि.सं. द्वारा स्वयं विकसित 360-डिग्री डिजिटल इकोसिस्टम है। यह एक स्वदेशी मंच है, जो शैक्षणिक, प्रशासनिक तथा विद्यार्थी-केंद्रित सेवाओं को एक ही प्लेटफ़ॉर्म पर एकीकृत करता है। प्रस्तुति में यह भी दिखाया गया कि पूरी तरह स्वदेशी, संगठन द्वारा विकसित और संचालित ईआरपी किस प्रकार देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों के व्यापक नेटवर्क में बड़े स्तर पर, सुरक्षित और आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूल सेवाएँ प्रदान कर सकता है। यह सम्मेलन के कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) समर्थित और डेटा-संचालित शासन के व्यापक दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित करता है।

इस सत्र के माध्यम से के.वि.सं. को डिजिटल परिवर्तन के क्षेत्र में अनुभव एवं विचारों के आदान-प्रदान का अवसर मिला, जिससे शिक्षा में ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में उसके नेतृत्व की पुनः पुष्टि हुई।

55वीं के.वि.सं. राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता 2026 का शुभारंभ

15 जुलाई 2026: 55वीं केन्द्रीय विद्यालय संगठन राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता 2026 का शुभारंभ 15 जुलाई 2026 को हुआ। इस प्रतियोगिता में देशभर से युवा खेल प्रतिभाएँ भाग ले रही हैं। प्रतियोगिता का आयोजन के.वि.सं. के 10 संभागों—आगरा, बेंगलुरु, चंडीगढ़, चेन्नई, देहरादून, दिल्ली, एर्णाकुलम, हैदराबाद, लखनऊ और मुंबई में किया जा रहा है।

के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा किया जा रहे इस आयोजन का उद्घाटन 15 जुलाई को पंजाब स्थित एलपीयू. में अपर आयुक्त (शै.) सुश्री चंदना मंडल द्वारा किया गया।

इस प्रतियोगिता में के.वि.सं. के 25 संभागों से 1565 से 1,565 बालिकाओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता पाँच खेल विधाओं—कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, निशानेबाजी और मुक्केबाजी में आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिताएं अंडर-14, अंडर-17 और अंडर-19 आयु वर्गों में आयोजित की जाएंगी।

BEST PRACTICE

श्रेष्ठ कार्यप्रणालियाँ

IGNITE MINDS
सीखने की नई ऊर्जा और जिज्ञासा का संचार

मिनी वर्मा
प्राचार्य, पीएम श्री के.वि. ललितपुर

पीएम श्री के.वि. ललितपुर ने विद्यालय के हर उपलब्ध समय को सीखने के अच्छे अवसर में बदलने के लिए IGNITE MINDS नाम से एक पहल की शुरूआत की है। इस पहल के माध्यम से न केवल कक्षा, बल्कि उसके बाहर भी विद्यार्थियों में जिज्ञासा, सोचने की क्षमता, समस्या हल करने, सही तरीके से बात रखने और समझदारी से निर्णय लेने की आदत को बढ़ावा दिया जाता है।

उद्देश्य

- सोचने और तर्क करने की क्षमता विकसित करना।
- जिज्ञासा और समस्या हल करने के कौशल को बढ़ावा देना।
- उपलब्ध समय का सही और सार्थक उपयोग करना।
- साथ मिलकर सीखने और एक-दूसरे से सीखने को बढ़ावा देना।
- आत्मविश्वास और 21वीं सदी के जरूरी कौशल विकसित करना।

क्रियान्वयन प्रक्रिया

इस पहल को विद्यालय की दैनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनाया गया है। इसे प्रार्थना सभा, प्रत्येक कक्षा के अंतिम दो मिनट, विद्यालय में प्रवेश के समय तथा एक पीरियड से दूसरे पीरियड के मध्य उपलब्ध समय के साथ प्रभावी रूप से जोड़ा गया है। इस दौरान स्वयंसेवी छात्र दिमागी, तार्किक प्रश्न, बुझौवल, चित्र-आधारित तर्क, पैटर्न पहचान तथा दैनिक जीवन से जुड़ी समस्या-समाधान गतिविधियाँ प्रस्तुत करते हैं। विद्यार्थी केवल उत्तर देने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अपने तर्क स्पष्ट करते हैं, विभिन्न समाधान-पद्धतियों की तुलना करते हैं और अपने साथियों को भी नए दृष्टिकोण से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके अतिरिक्त, स्वयंसेवी छात्रों को नियमित रूप से परिवर्तन किया जाता है तथा शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर समय-समय पर नई एवं नवाचारी गतिविधियाँ जोड़ते रहते हैं।

नवाचारी विशेषताएँ

- सीखना केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहता।
- हर उपलब्ध समय का उपयोग अच्छे काम में किया जाता है।
- विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई योजना नेतृत्व क्षमता को बढ़ाती है।
- हर दिन सोचने और तर्क करने का अभ्यास होता है।
- सहयोग और भागीदारी वाला सीखने का माहौल बनता है।

प्रभाव

इस पहल से विद्यार्थियों में तर्क करने की क्षमता, विश्लेषणात्मक सोच, कक्षा में भागीदारी, आत्मविश्वास, समस्या हल करने की क्षमता और साथियों से सीखने की आदत में अच्छा सुधार हुआ है। इससे विद्यालय में एक प्रेरणादायक और बौद्धिक माहौल बना है।

परिणाम

- कक्षा की चर्चाओं में विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ी है।
- तर्क आधारित प्रतियोगिताओं में आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई है।
- विश्लेषण करने और प्रश्न पूछने की क्षमता में सुधार हुआ है।
- शिक्षकों और अभिभावकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है।
- सीखने की गतिविधियाँ बनाने में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी बढ़ रही है।
- जिज्ञासा और खोज करने की स्थायी आदत विकसित हुई है।

निष्कर्ष

IGNITE MINDS पहल पीएम श्री के.वि. ललितपुर में जिज्ञासा और खोज करने की एक मजबूत संस्कृति के रूप में विकसित हुई है। रोज़मर्रा के हर पल को सीखने के अवसर में बदलकर यह पहल विद्यार्थियों में सोचने की क्षमता, रचनात्मकता और समस्या हल करने की योग्यता को बढ़ाती है। साथ ही, यह उन्हें 21वीं सदी के लिए सोचने वाले विद्यार्थी, नए विचार देने वाले व्यक्ति और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी तैयार करती है।

अपशिष्ट से उत्कृष्टता
इनडोर पोर्टेबल किचन गार्डन की प्रेरक कहानी

इनडोर पोर्टेबल किचन गार्डन: कचरे को जीवंत कक्षा में बदलना

श्री दिग्गराज मीणा
उपायुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

"संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग ही सतत विकास की पहली सीढ़ी है।" इसी विचार को साकार करते हुए पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1, सागर ने मिशन लाइफ के अंतर्गत एक ऐसी अभिनव बहुविषयी परियोजना का सफल क्रियान्वयन किया है, जिसने पर्यावरण संरक्षण, नवाचार और अनुभवात्मक अधिगम को एक ही सूत्र में पिरो दिया है। विद्यालय के मिशन लाइफ क्लब एवं आर्ट क्लब के संयुक्त प्रयासों से विकसित यह पहल इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि यदी सोच रचनात्मक हो तो साधारण वस्तुएँ भी असाधारण शैक्षणिक संसाधनों में परिवर्तित हो सकती हैं।

विद्यालय भवन की पुताई पूर्ण होने के पश्चयात बड़ी संख्या में पेंट की प्लास्टिक की बाल्टियाँ अनुपयोगी हो गई थीं। सामान्यता: ऐसी बाल्टियों को कबाड़ के रूप में बेच दिया जाता है अथवा यह बेकार पड़ी रह जाती हैं, किंतु विद्यालय ने इन्हें अपशिष्ट नहीं, बल्कि अवसर के रूप में देखा। परिणामस्वरूप इन खाली बाल्टियों का पुनः उपयोग करते हुए विद्यालय परिसर के भीतर एक आकर्षक एवं उपयोगी इनडोर पोर्टेबल किचन गार्डन विकसित किया गया।

इस अनूठे किचन गार्डन में भिंडी, टमाटर, बैंगन, सेम, मूली, पालक, मिर्च, लौकी सहित अनेक प्रकार की सब्जियों के पौधे लगाए गए। इन पौधों को विद्यालय भवन के भीतर कक्षाओं के समीप सुव्यवस्थित ढंग से स्थापित किया गया, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी प्रतिदिन सहज रूप से उनका अवलोकन कर सके। प्रत्येक बाल्टी पर संबंधित पौधे की महत्त्वपूर्ण जानकारी भी अंकित की गई है, जिससे यह व्यवस्था केवल हरित सौंदर्य तक सीमित न रहकर एक सजीव शिक्षण संसाधन का रूप ले चुकी है।

आज यह इनडोर पोर्टेबल किचन गार्डन विद्यार्थियों के लिए जीवंत शिक्षण-सहायक सामग्री के रूप में कार्य कर रहा है। पुस्तकों में पढ़ी जाने वाली अवधारणाएँ अब उनके सामने वास्तविक रूप में उपस्थित हैं। पौधों को बढ़ते हुए देखना, उनकी संरचना को समझना और उनके विकास की प्रत्येक अवस्था का प्रत्यक्ष अनुभव करना विद्यार्थियों के सीखने को अधिक प्रभावी, रोचक और स्थायी बना रहा है।

यह परियोजना सभी स्तरों के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है—प्रारंभिक स्तर: विद्यार्थी वास्तविक पौधों को देखकर उत्साह एवं जिज्ञासा का अनुभव करते हैं। तैयारी स्तर: विद्यार्थी जड़, तना, पत्तियाँ, फूल एवं फल जैसे पौधों के भागों को प्रत्यक्षता से देखकर सरलता से समझ पाते हैं।

मध्य स्तर: लता, बेल, शाक, झाड़ी एवं पौधों के जीवन चक्र जैसी अवधारणाएँ वास्तविक उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट होती हैं।

माध्यमिक स्तर: विद्यार्थी बीज बोने से लेकर अंकुरण, पुष्पन एवं फलन तक पौधों के सम्पूर्ण जीवन चक्र का अध्ययन एवं अभिलेखन करते हैं।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थी जल, धूप एवं खाद जैसे कारकों में परिवर्तन करके पौधों की वृद्धि में अंतर का अध्ययन करते हैं, जिससे उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अनुसंधान की प्रवृत्ति विकसित होती है।

यह परियोजना इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि साधारण संसाधनों के रचनात्मक उपयोग से न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सकता है, बल्कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को भी अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाया जा सकता है। इस पहल से प्रेरित होकर संभाग के अन्य पीएम श्री विद्यालय भी इस प्रकार के किचन गार्डन विकसित कर रहे हैं। इस प्रकार, यह इनडोर पोर्टेबल किचन गार्डन न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों को सुदृढ़ करता है, बल्कि उनमें पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित करता है—जो कि मिशन लाइफ का वास्तविक उद्देश्य है।

के.वि. से ओलंपिक तक: धिनिधि देसिंघु की स्वर्णिम उड़ान

SUCCESS STORY

ताजुद्दीन शेख
उपायुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु

केवल 14 वर्ष की आयु में, केन्द्रीय विद्यालय डीआरडीओ, बेंगलुरु की छात्रा धिनिधि देसिंघु ने पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत की सबसे कम उम्र की ओलंपियन बनकर इतिहास रचा था। के.वि.सं. की कक्षाओं से विश्व के सबसे बड़े खेल मंच तक की उनकी प्रेरणादायक यात्रा, केन्द्रीय विद्यालयों में युवा प्रतिभाओं को मिलने वाले अवसरों और प्रोत्साहन को दर्शाती है।

वर्ष 2018 में मनोरंजन के उद्देश्य से शुरू हुई तैराकी जल्द ही एक असाधारण खेल यात्रा में बदल गई। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए उन्हें प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया, जो भारत की मा. राष्ट्रपति द्वारा धिनिधि को प्रदान किया गया। फ्रीस्टाइल तैराकी की एक उत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में धिनिधि के नाम 100 मीटर, 200 मीटर और 400 मीटर फ्रीस्टाइल में सर्वश्रेष्ठ भारतीय समय (Best Indian Timings) दर्ज हैं। उन्होंने तीन बेस्ट इंडियन टाइम, तीन राष्ट्रीय खेल रिकॉर्ड, दो सीनियर राष्ट्रीय रिकॉर्ड, चार जूनियर राष्ट्रीय रिकॉर्ड तथा चार सब-जूनियर राष्ट्रीय रिकॉर्ड अपने नाम किए हैं।

धिनिधि ने अब तक 50 से अधिक राष्ट्रीय पदक तथा छह अंतरराष्ट्रीय पदक जीते हैं। हाल ही में 12वीं एशियन एज ग्रुप चैंपियनशिप, थाईलैंड (2026) में उन्होंने 200 मीटर फ्रीस्टाइल में स्वर्ण पदक, 100 मीटर फ्रीस्टाइल में रजत पदक और 400 मीटर फ्रीस्टाइल में कांस्य पदक जीता। इसके साथ ही उन्होंने रिले स्पर्धाओं में भी कांस्य पदक प्राप्त किए।

धिनिधि ने ओलंपिक खेलों, एशियाई खेलों, विश्व चैंपियनशिप, विश्व जूनियर एक्वेटिक्स चैंपियनशिप, एशियन एक्वेटिक्स चैंपियनशिप, एशियन यूथ गेम्स तथा एशियन एज ग्रुप चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। इन सभी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उन्होंने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन और आत्मविश्वास का परिचय दिया।

उनकी यह यात्रा विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए शिक्षा के साथ-साथ खेलों में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने की के.वि.सं. की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। धिनिधि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उस दृष्टिकोण का सशक्त उदाहरण हैं, जो प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास को बढ़ावा देता है तथा उन्हें अपनी व्यक्तिगत प्रतिभाओं को पहचानने, विकसित करने और उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। उनकी प्रेरणादायक कहानी आज भी के.वि.सं. के विद्यार्थियों को बड़े सपने देखने, निरंतर प्रयास करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रही है।

संस्कृत प्रवाह

नास्ति विद्या समं चक्षु नास्ति सत्य समं तपः।
नास्ति राग समं दुखं नास्ति त्याग समं सुखं॥

भावार्थ

विद्या के समान आँख नहीं है, सत्य के समान तपस्या नहीं है, आसक्ति के समान दुःख नहीं है और त्याग के समान सुख नहीं है।

नवीनतम प्रकाशन

पढ़ने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें।

शाला ध्वनि

KVS News
(अप्रैल-जून 2026)

विचारणीय विचार

"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा!"

~ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

आईआईएसईआर कोलकाता में विज्ञान और अनुसंधान से रूबरू हुए के.वि. के विद्यार्थी

वैज्ञानिक आकांक्षाओं को नई उड़ान

70 युवा विद्यार्थियों ने आईआईएसईआर कोलकाता में विज्ञान, अनुसंधान और खोज का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया

डी. पी. पटेल
उपायुक्त (शै.), के.वि.सं. (मु.)

पूर्वोत्तर राज्यों के पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालयों की कक्षा XI एवं XII के विज्ञान संकाय के 70 मेधावी विद्यार्थियों ने 15 से 22 जुलाई 2026 तक भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर), कोलकाता में आयोजित एक सप्ताह के समर कैंप में सहभागिता की। इस समर कैंप का उद्घाटन 15 जुलाई 2026 को शिक्षा तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (DoNER) के माननीय राज्य मंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार ने किया। इस पहल के माध्यम से विद्यार्थियों को देश के अग्रणी वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान के शैक्षणिक एवं शोध वातावरण का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ। उन्हें अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, उन्नत अनुसंधान प्रक्रियाओं, वैज्ञानिक कार्यप्रणाली तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपलब्ध उच्च शिक्षा और शोध के विविध अवसरों से अवगत कराया गया।

यह समर कैंप केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देने के निरंतर प्रयासों के अंतर्गत आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम ने विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक-आधारित अध्ययन से आगे बढ़कर अवलोकन, प्रयोग, संवाद और जिज्ञासा के माध्यम से विज्ञान को समझने का अवसर प्रदान किया। अनेक विद्यार्थियों के लिए यह अनुभव एक अग्रणी वैज्ञानिक संस्थान के शैक्षणिक और अनुसंधान परिवेश की प्रारम्भिक झलक था।

के.वि.सं. के प्रतिभागियों ने विज्ञान की दुनिया से किया साक्षात्कार

- व्यावहारिक प्रयोग
- उन्नत प्रयोगशालाओं का अनुभव
- अनुसंधान सुविधाओं का अवलोकन
- वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं के साथ संवाद
- उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान में करियर की जानकारी

व्यावहारिक अधिगम (Hands-on Learning)

विद्यार्थियों ने आईआईएसईआर के संकाय सदस्यों द्वारा दिए गए व्याख्यानों में भाग लिया, संवादात्मक प्रयोगशाला प्रदर्शनों तथा व्यावहारिक प्रयोग सत्रों में सहभागिता की और उन्नत अनुसंधान सुविधाओं का अवलोकन किया। संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं, पीएचडी शोधार्थियों तथा छात्र स्वयंसेवकों के साथ संवाद के माध्यम से विद्यार्थियों ने यह समझा कि वैज्ञानिक प्रश्नों की पहचान कैसे की जाती है, उनका अध्ययन किस प्रकार किया जाता है तथा व्यवस्थित प्रयोगों और साक्ष्य-आधारित तर्कों के माध्यम से उनका विश्लेषण कैसे किया जाता है।

विद्यार्थियों को भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित और पृथ्वी विज्ञान सहित वैज्ञानिक अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों तथा बहुविषयक वैज्ञानिक अध्ययन से परिचित कराया गया। इन सत्रों ने विद्यार्थियों को विद्यालय में सीखी गई अवधारणाओं को उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों से जोड़ने तथा यह समझने में सहायता की कि वैज्ञानिक ज्ञान समकालीन चुनौतियों के समाधान में किस प्रकार योगदान देता है।

शोधकर्ताओं के साथ हुई चर्चाओं ने विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, वैज्ञानिक करियर तथा अनुसंधान के विभिन्न मार्गों की जानकारी भी प्रदान की। शोधकर्ताओं की शैक्षणिक यात्रा और वैज्ञानिक कार्य की प्रकृति को जानकर विद्यार्थियों को विद्यालय के बाद उपलब्ध अवसरों की बेहतर समझ प्राप्त हुई।

आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्या-समाधान कौशल

इस समर कैंप ने विद्यार्थियों को विज्ञान को जिज्ञासा और प्रश्न पूछने की दृष्टि से समझने के लिए प्रेरित किया। प्रयोगशाला गतिविधियों और चर्चाओं में सार्थक प्रश्न पूछने, विचारों की जाँच करने, अवलोकनों का विश्लेषण करने तथा साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालने के महत्व पर विशेष बल दिया गया। ऐसे अनुभवों ने विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान और विश्लेषणात्मक कौशल को सुदृढ़ किया तथा उन्हें विज्ञान को केवल परीक्षा का विषय नहीं, बल्कि खोज की एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया।

सहपाठी अधिगम एवं सहयोगात्मक सहभागिता

इस कार्यक्रम ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को एक साथ लाकर सहपाठी अधिगम, टीमवर्क तथा विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित किया। आईआईएसईआर के अनुसंधान वातावरण से परिचित होने के बाद विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा तथा विज्ञान के क्षेत्र में करियर बनाने की रुचि और अधिक बढ़ी। इस अनुभव ने उन्हें उच्च शैक्षणिक लक्ष्य निर्धारित करने तथा देश के अग्रणी वैज्ञानिक संस्थानों में अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

कक्षा से अनुसंधान तक

आईआईएसईआर कोलकाता समर कैंप ने विद्यार्थियों को शोधकर्ताओं, प्रयोगशालाओं तथा जिज्ञासा और नवाचार पर आधारित वातावरण से प्रत्यक्ष रूप से जोड़कर कक्षा अधिगम और वैज्ञानिक अनुसंधान के बीच की दूरी को कम किया। इस अनुभव ने विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर दिया कि वैज्ञानिक अवधारणाएँ किस प्रकार प्रश्नों, प्रयोगों और नई खोजों का रूप लेती हैं।

के.वि.सं. के प्रतिभागियों के लिए यह कार्यक्रम केवल विज्ञान को समझने का अवसर ही नहीं था, बल्कि स्वयं को भविष्य के वैज्ञानिक, शोधकर्ता और नवप्रवर्तक के रूप में देखने का भी अवसर था। आईआईएसईआर के अनुसंधान परिवेश से परिचय ने उनमें उच्च शिक्षा तथा विज्ञान एवं अनुसंधान के क्षेत्र में करियर बनाने की आकांक्षाओं को और अधिक सुदृढ़ किया।

यह पहल विद्यार्थियों को कक्षा से आगे बढ़कर सार्थक अधिगम के अवसर प्रदान करने तथा उनकी रुचियों और क्षमताओं को पहचानने और विकसित करने के प्रति के.वि.सं. की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। अग्रणी संस्थानों तथा वास्तविक जीवन के अधिगम वातावरण से युवा विद्यार्थियों को जोड़कर के.वि.सं. उनके ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के विकास के लिए निरंतर नए अवसर उपलब्ध करा रहा है।

आईआईएसईआर कोलकाता समर कैंप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उस दृष्टिकोण के भी अनुरूप है, जो अनुभवात्मक अधिगम, आलोचनात्मक चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास पर बल देता है। इस प्रकार की पहलों के माध्यम से के.वि.सं. विद्यार्थियों को कार्य करके सीखने, जिज्ञासा के साथ प्रश्न पूछने तथा उद्देश्यपूर्ण ढंग से ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रेरित कर रहा है, जिससे वे भारत में विज्ञान, अनुसंधान और नवाचार के निरंतर विकसित हो रहे परिदृश्य में सार्थक योगदान देने के लिए तैयार हो सकें।

जानें: भौतिकी • रसायन विज्ञान • जीव विज्ञान • गणित • पृथ्वी विज्ञान

अनुभव करें: व्यावहारिक प्रयोग • अनुसंधान सुविधाएँ • वैज्ञानिकों के साथ संवाद

सीखें: • आलोचनात्मक चिंतन • समस्या-समाधान • वैज्ञानिक अन्वेषण

लक्ष्य बनाएँ: • उच्च शिक्षा • अनुसंधान • विज्ञान के क्षेत्र में करियर

"विद्यालय जीवन में भारत के अग्रणी अनुसंधान संस्थानों में से एक को निकट से जानने और समझने का अवसर मिलना मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक अनुभव रहा। इसने हमें भविष्य में यहाँ अध्ययन करने के अपने सपने को साकार करने की दिशा में एक और कदम आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है।"

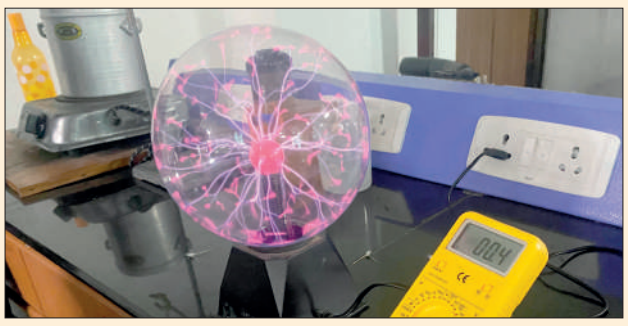

छात्रों की बात

- *"मुझे उम्मीद है कि एक दिन मैं आईआईएसईआर कोलकाता वापस आऊँगा—समर कैंप के प्रतिभागी के रूप में नहीं, बल्कि यहाँ का एक गौरवान्वित विद्यार्थी बनकर।"*
- *"विद्यालयी जीवन के दिनों में भारत के शीर्ष अनुसंधान संस्थानों में से एक से जुड़ने का अनुभव बहुत शानदार रहा।"*

ग्रीष्मकालीन शिविर का उद्घाटन मा. शिक्षा एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्य मंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार द्वारा किया गया।

जुलाई 2026 की झलकियाँ

के.वि. पललहाड़ा के स्थायी परिसर का हुआ शिलान्यास

नई दिल्ली, 10 जुलाई 2026: केन्द्रीय विद्यालय, पललहाड़ा, ओडिशा के स्थायी परिसर का शिलान्यास तथा अस्थायी परिसर का उद्घाटन मा. शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर विद्यालय समुदाय, स्थानीय प्रशासन तथा शिक्षा क्षेत्र से जुड़े अनेक गणमान्य सदस्य भी उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम क्षेत्र में शैक्षिक अवसंरचना को सुदृढ़ बनाने तथा गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा की पहुँच का विस्तार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ। स्थायी परिसर के निर्माण से विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण, आधुनिक सुविधाएँ और अधिक सुलभ अधिगम संसाधन उपलब्ध होंगे, जिससे उनकी समग्र शैक्षिक प्रगति को बल मिलेगा। केन्द्रीय विद्यालय, पललहाड़ा की स्थापना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप, समावेशी, समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के प्रति भारत सरकार की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

32वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस हेतु क्षमता निर्माण कार्यशाला

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के ज़ीट, ग्वालियर में 16 से 17 जुलाई 2026 तक 32वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस (2026-27) के लिए दो दिवसीय अभिमुखीकरण एवं क्षमता-विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का नेतृत्व संयुक्त आयुक्त (अकादमिक) श्री सोमित श्रीवास्तव ने किया। कार्यशाला में केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय), 25 क्षेत्रीय कार्यालयों तथा ज़ीट, ग्वालियर के अधिकारियों ने सहभागिता की। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के प्रभावी आयोजन के लिए योजना-निर्माण, समन्वय एवं क्रियान्वयन रणनीति को और अधिक सुदृढ़ बनाना था। कार्यशाला के दौरान कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन, क्षमता निर्माण तथा वैज्ञानिक अनुसंधान एवं जिज्ञासा-आधारित गतिविधियों में विद्यार्थियों की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करने पर विशेष ध्यान दिया गया। साथ ही, विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने और उन्हें नवीन एवं रचनात्मक समाधानों की खोज के लिए प्रोत्साहित करने पर भी बल दिया गया।

सुधा मूर्ति के सान्निध्य में विद्यार्थियों ने सीखे जीवन के अनमोल मूल्य

18 जुलाई 2026 को केन्द्रीय विद्यालय, आईआईटी धारवाड़ के विद्यार्थियों को आईआईटी धारवाड़ पुस्तकालय में प्रख्यात लेखिका एवं समाजसेवी श्रीमती सुधा मूर्ति के साथ प्रेरणादायी संवाद का अवसर प्राप्त हुआ। इस विशेष कार्यक्रम में उन्होंने विद्यार्थियों को पढ़ने की आदत विकसित करने, कठिन परिश्रम करने तथा ईमानदारी, विनम्रता और करुणा जैसे जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का विशेष आकर्षण वह क्षण रहा, जब श्रीमती सुधा मूर्ति ने विद्यार्थियों द्वारा लाई गई पुस्तकों पर स्वयं हस्ताक्षर किए। इस आत्मीय संवाद ने विद्यार्थियों को उनके जीवन अनुभवों और प्रेरक विचारों से सीखने का अविस्मरणीय अवसर प्रदान किया। इस प्रेरणादायी मुलाकात ने विद्यार्थियों को समर्पण, दयालुता और विनम्रता के साथ उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया तथा उनके व्यक्तित्व एवं भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध हुई।

डूरंड कप की विरासत से प्रेरित हुए के.वि. के प्रतिभावान खिलाड़ी

केन्द्रीय विद्यालय, आईआईटी गुवाहटी में 135वें डूरंड कप के राष्ट्रव्यापी जन-जागरूकता अभियान के अंतर्गत प्रतिष्ठित डूरंड कप ट्रॉफियों का 30 मिनट तक विशेष प्रदर्शन किया गया। भारतीय सेना की रेड हॉर्न्स डिवीजन के जवानों की सुरक्षा में लाई गई इन ट्रॉफियों ने विद्यार्थियों को भारतीय फुटबॉल की समृद्ध विरासत तथा अनुशासन, टीम भावना और राष्ट्रसेवा जैसे मूल्यों से प्रेरित किया।

इस अवसर पर सेना के अधिकारियों ने विद्यार्थियों को डूरंड कप के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराया। उन्होंने बताया कि वर्ष 1888 में शुरू हुआ यह टूर्नामेंट एशिया का सबसे पुराना फुटबॉल टूर्नामेंट तथा विश्व की तीसरी सबसे पुरानी निरंतर आयोजित होने वाली फुटबॉल प्रतियोगिता है। अधिकारियों ने विद्यार्थियों को खेलों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ भारतीय सशस्त्र बलों में करियर बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

राज्य पुरस्कार कैंप-2026: 7605 विद्यार्थियों की सशक्त भागीदारी

नई दिल्ली: केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने 6 से 10 जुलाई 2026 तक देशभर के सभी 21 क्षेत्रीय कार्यालयों में सफलतापूर्वक राज्य पुरस्कार टेस्टिंग कैंप-2026 का आयोजन किया। यह आयोजन भारत स्काउट्स एवं गाइड्स आंदोलन के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, अनुशासन और सेवा-भाव विकसित करने के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को पुनः स्थापित करता है।

पाँच दिवसीय इस मूल्यांकन शिविर में देशभर के केन्द्रीय विद्यालयों के कुल 7,605 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें 4,134 स्काउट्स तथा 3,471 गाइड्स शामिल थे। राज्य पुरस्कार टेस्टिंग कैंप भारत स्काउट्स एवं गाइड्स कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें प्रतिभागियों का मूल्यांकन स्काउटिंग एवं गाइडिंग कौशल, नेतृत्व क्षमता, सामुदायिक सेवा, टीम भावना तथा चरित्र निर्माण जैसे विभिन्न पहलुओं के आधार पर किया जाता है। यह शिविर विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता, अनुशासन और जिम्मेदार नागरिकता जैसे मूल्यों का परिचय देने तथा उन्हें व्यवहार में प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है।

के.वि.सं. और एडसिल के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

29 जुलाई, 2026: केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने शिक्षा को और अधिक आधुनिक और तकनीक से जोड़ने के लिए एडसिल (इंडिया) लिमिटेड के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते पर के.वि.सं. की ओर से अपर आयुक्त और एडसिल (इंडिया) लिमिटेड की ओर से कार्यकारी निदेशक ने हस्ताक्षर किए। इस समझौते का उद्देश्य शिक्षा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन को प्रभावी रूप से लागू करना, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को अधिक नवाचारपूर्ण बनाना तथा विद्यार्थियों के लिए तकनीक-आधारित शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता को सुदृढ़ करना है। यह साझेदारी न केवल शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होगी, बल्कि विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, समावेशी और भविष्य-उन्मुख बनाने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

उभरते सितारे

आरएसआई-इंडिया 2026 में सुलिप्सा ने बिखेरी चमक

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पीतमपुरा की छात्रा सुलिप्सा भट्ट ने प्रतिष्ठित रिसर्च साइंस इनिशिएटिव इंडिया 2026, जो भारत के सबसे चयनात्मक एसटीईएम कार्यक्रमों में से एक है, सफलतापूर्वक पूर्ण किया। देशभर से चयनित केवल 29 छात्रों में शामिल सुलिप्सा ने आईआईएससी, बेंगलुरु में छह सप्ताह के शोध कार्यक्रम में भाग लिया, जहाँ उन्होंने सांप के विष के प्रमुख विषाक्त तत्वों को अवरुद्ध करने के लिए एक हर्बल पौधे के अर्क पर आधारित अनुसंधान में योगदान दिया।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 में अजय ने जीता रजत पदक

ग्लासगो, 2026: पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 3, ईएमई सेंटर, बैरागढ़ के पूर्व विद्यार्थी (बैच 2023) वल्लुरी अजय बाबू ने राष्ट्रमंडल खेल 2026 में पुरुषों की 79 किलोग्राम भारोत्तोलन स्पर्धा में कड़ी मेहनत, समर्पण और उत्कृष्ट खेल प्रतिभा का परिचय देते हुए रजत पदक अपने नाम किया। अजय की इस सफलता ने एक बार फिर यह सिद्ध किया है कि के.वि.सं. न केवल विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है, बल्कि खेल सहित विभिन्न क्षेत्रों में उनकी प्रतिभा को निखारने और उन्हें उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता है।

1362 के पड़ाव पर के.वि.सं.

शैक्षणिक सत्र 2026–27 के दौरान 74 नए केन्द्रीय विद्यालय विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में खोले गए हैं। इसके साथ ही देशभर में के.वि.सं. के विद्यालयों की कुल संख्या बढ़कर 1,362 हो गई है।

इससे पूर्व भारत सरकार ने वर्ष 2024 में 85 तथा वर्ष 2025 में 57 नए केन्द्रीय विद्यालयों को स्वीकृति प्रदान की थी। इन नए विद्यालयों की स्थापना के माध्यम से देशभर में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच का और अधिक विस्तार हुआ है।

शैक्षणिक सत्र 2026–27 में नवस्थापित केन्द्रीय विद्यालयों की सूची:

क्र.सं.	नए केन्द्रीय विद्यालयों के नाम
1	पलासा, आंध्र प्रदेश
2	नुज़विद, आंध्र प्रदेश
3	नंदीगामा, आंध्र प्रदेश
4	वलसापल्ले, मदनपल्ले, आंध्र प्रदेश
5	माचरेला, आंध्र प्रदेश
6	मंगसमुद्रम. चित्तूर, आंध्र प्रदेश
7	बैरुगनीपल्ले, चित्तूर, आंध्र प्रदेश
8	अनाकपल्ले, आंध्र प्रदेश
9	बोकाजन, असम
10	जागीरोड, असम
11	क्र.-3, दरभंगा (एम्स), बिहार
12	नवादा, बिहार
13	आरा टाउन, बिहार
14	जमुआरा कटनी कॉल, बिहार
15	मुज़फ्फरपुर (बेला औद्योगिक क्षेत्र), बिहार
16	देवकुंड, बिहार
17	मधेपुरा, बिहार
18	झंझारपुर, बिहार
19	मधुबनी, बिहार
20	मुंगेली, छत्तीसगढ़
21	जीसी, सीआरपीएफ आरंग, छत्तीसगढ़
22	सूरजपुर, छत्तीसगढ़
23	100वीं बटालियन, आरएएफ/सीआरपीएफ, वस्त्राल, गुजरात
24	नूंह, हरियाणा
25	कोटखाई, हिमाचल प्रदेश
26	रत्नीपोरा, जम्मू और कश्मीर
27	गुल, जम्मू और कश्मीर
28	नागसेनी, जम्मू और कश्मीर
29	रियासी, जम्मू और कश्मीर
30	विजयपुर, जम्मू और कश्मीर
31	मुगल मैदान, जम्मू और कश्मीर
32	रामबन, जम्मू और कश्मीर
33	पंचारी, जम्मू और कश्मीर
34	अनंतनाग, जम्मू और कश्मीर
35	धनवार, झारखंड
36	सीसीएल डकरा, झारखंड
37	बरकठा, झारखंड
38	आईआईटी धारवाड़, चिक्कामल्लिगावाड, कर्नाटक
39	मुदनाल गाँव, कर्नाटक
40	शिनाल, अथानी तालुक, कर्नाटक
41	चित्रदुर्ग, कर्नाटक
42	208 कोबरा बटालियन, सीआरपीएफ जान्हवा, बालाघाट, मध्य प्रदेश
43	बड़ा मलहेरा, मध्य प्रदेश
44	समनापुर, नैनपुर, मध्य प्रदेश
45	नौगांव, मध्य प्रदेश
46	मैहर, मध्य प्रदेश
47	निवाड़ी, मध्य प्रदेश
48	नागदा, मध्य प्रदेश
49	गढ़चिरौली, महाराष्ट्र
50	अकोला, महाराष्ट्र
51	नाचणे, महाराष्ट्र
52	पदमपुर, ओडिशा
53	पल्लहाड़ा (पाललहाड़ा), ओडिशा
54	रायराखोल (रेढ़ाखोल), ओडिशा
55	सिरोही, राजस्थान
56	मेड़ता सिटी, राजस्थान
57	राजगढ़, राजस्थान
58	हिंडौन सिटी, राजस्थान
59	राजसमंद, राजस्थान
60	भीम, राजस्थान
61	बीएसएफ सतराना, राजस्थान
62	थेनी, तमिलनाडु
63	कृष्णागिरि, तमिलनाडु
64	वी. ओ. चिदंबरनार पोर्ट प्राधिकरण, तमिलनाडु
65	नागावरम शिवर, तेलंगाना
66	चेलगल, तेलंगाना
67	उदयपुर, त्रिपुरा
68	बडेरा, उरई, उत्तर प्रदेश
69	शामली, उत्तर प्रदेश
70	क्र.3 एचयूआरएल परिसर, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
71	जीसी, सीआरपीएफ, चकिया, चंदौली, उत्तर प्रदेश
72	मऊरानीपुर, उत्तर प्रदेश
73	मदन नेगी, उत्तराखंड
74	द्वाराहाट, उत्तराखंड

संरक्षक: विकास गुप्ता, *आईएएस*, आयुक्त, के.वि.सं.
प्रधान संपादक: चंदना मंडल, अपर आयुक्त (शै.)

संपादक मंडल: सोमित श्रीवास्तव संयुक्त आयुक्त (शै.)
रत्ना पाठक, सहायक शिक्षा अधिकारी
सचिन राठौर, सहायक संपादक

सहभागी: समस्त केन्द्रीय विद्यालय

संपादकीय सलाहकार
सुरभि गोयल, कंटेंट राइटर
अमन, कंटेंट राइटर
संजना जांगड़ा, ग्राफिक डिजाइनर

सभी संभाग अपनी टिप्पणी और विशेष स्टोरी निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं:
kvschronicle@gmail.com

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन
यह ई-प्रकाशन केवल आंतरिक वितरण हेतु के.वि.सं. (मु.) द्वारा प्रकाशित।